## लुधियाना शहर में दिनांक 6 मार्च 2023 को हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

सजनों यह प्रसन्नता की बात है कि लुधियाना शहर अब उन्नति पथ पर आगे बढ़ रहा है। सत्संग के साथ-साथ संगीत कला केंद्र भी आगे बढ़ने लगा है और एक नई सुविधा भी डिस्पेंसरी के रूप में लुधियाना वासियों को प्राप्त होने जा रही है। इस संदर्भ में सजनों कोई भी सुविधा प्राप्त करना सहज होता है परंतु उस सुविधा का लाभ जरूरतमंद सज्जनों तक पहुंचाने हेतु पूरी लगन के साथ प्रयास करना पड़ता है। तभी वांछित परिणाम प्राप्त होता है और यश कीर्ति की प्राप्ति होती है। ऐसा होने पर ही सजनों आपकी मेहनत रंग लाती है और आपका त्याग सफल माना जाता है और आपको आनंद की प्राप्ति होती है।

आप सब मानोगे कि इस आनंद की प्राप्ति हेतु गृहस्थ आश्रम यानि अपनी दैनिक व्यस्त दिनचर्या से कुछ समय निकालना पड़ता है और परोपकार के कार्यों में जुटना पड़ता है। तभी जरूरतमंदों तक उस सुविधा का समुचित लाभ पहुंच पाता है और चहुं और उस सफलता का यशोगान होता है। इस विषय में सजनी याद रखो परोपकार प्रवृत्ति इंसान ही सबसे अच्छा माना जाता है। अतः आज आपने भी विचार कर अपने अंदर दृढ़ता पूर्वक निश्चय लेना है कि हम सब एकजुट होकर, इसी प्रकार मेहनत करते हुए एक-एक कदम विचार पूर्वक सफलता की ओर बढ़ाएंगे और इस हेतु अपने आप को निष्कामता से परोपकार के कार्यों के प्रति समर्पित कर देंगे।

यहां सज्जनों हम कभी-कभी देखते हैं कि जब सज्जन सेवा में अपना समय लगाते हैं तो कई बार उन्हें महसूस होता है कि ऐसा करने से मुझे क्या प्राप्त हो रहा है ? समझो सज्जनों ऐसे इंसानों के अंदर जब यह  भाव आता है तो इसका सीधा सा मतलब होता है कि कामना उन्हें सता रही है यानि यह कामी सज्जन है और उन्हें लगता है कि हम जो भी अपना समय परमार्थ में दे रहे हैं, उसके बदले

में हमें कुछ मिलना चाहिए। यह सज्जनों बहुत बड़ी भूल है। अतः यह भूल चाहे कोई छोटा हो या बड़ा मत करना। इस भूल को करने के स्थान पर जो सज्जन आज नहीं आ पाए उनको भी यह संदेश देकर प्रेरित करना कि अब से उन्हें भी निष्काम सेवा के लिए समय निकालना है। ऐसा करने से सजनों ताकतवर हो जाओगे यानि एक से मिलकर दो, दो से मिलकर चार और चार से मिलकर अनेकानेक संगठित रूप ले लोगे। इस संगठन के बाद महत्वपूर्ण होगा एकमतत्ता से कार्य करना। इस एकमतत्ता के अभाव में सजनों जब हम कार्य करते हैं तो वह कार्य लाभकारी सिद्ध होने के स्थान पर विघ्नकारी सिद्ध होता है क्योंकि तब सब मैं भाव से युक्त होकर अपनी-अपनी मारते हैं। मैं भाव अहंकारता का प्रतीक होता है। अतः इस भाव में कभी भी नहीं उलझना और मान अपमान को सम कर जान, सत्य निष्ठा से ड्यूटी के प्रति समर्पित रहना है ताकि आपके कमजोर पड़ने से किसी जरूरतमंद का नुकसान न हो जाए। यह सब को याद रखना है। अब बताओ कि क्या बाल, युवा, प्रौढ़, वृद्ध, सब निष्काम सेवा के प्रति समर्पित होकर अपना कर्तव्य निभाने के लिए तत्पर हो?
हां जी।
तो फिर सब मुस्कुराते हुए यह कार्य करना। जानो आपकी मुस्कुराहट आपकी चारित्रिक सुंदरता का प्रतीक होती है। अतः इसी स्वभाव में बने रहना और किसी भी कारण अपने चरित्र पर दाग नहीं लगने देना क्योंकि चारित्रिक अवनति अपयश का कारण बनती है। सो ऐसा मत होने देना और न ही निष्काम सेवा में रत होकर कभी कामी बनना। जान लो कामी वही बनता है जिसके पास मानवोचित परिपूर्ण ज्ञान की कमी होती है। ऐसा भौतिक ज्ञान में उलझा हुआ इंसान आत्मिक ज्ञान प्राप्ति के प्रति कभी ध्यान नहीं देता। इसीलिए उसकी मानसिकता जीवन के उतार-चढ़ाव में सबल नहीं बनी रह पाती और वह सदा दुविधा ग्रस्त रहता है। इस तथ्य से सज्जनों आपको आत्मज्ञान प्राप्त करने का महत्व और महानता समझनी होगी तथा भौतिक ज्ञान के साथ-साथ अध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने को प्राथमिकता देनी होगी ताकि आप पूरी तरह से अपनी

वास्तविकता को जान पहचान जाओ और निष्पाप होकर, इस जगत के समस्त कर्तव्यों का निर्विकारता से निर्वहन कर को।

ऐसा होने पर ही सजनों आप सद्-मार्ग पर प्रशस्त हो पाओगे और आपका मन सदा शांत रहेगा। मन शांत है तो सज्जनों याद रखो कि आपके मन में सदा सकारात्मक, सात्विक विचार ही उपजेंगे। इसके विपरीत आत्मज्ञान के अभाव में व मन के अशांत होने की स्थिति में  अंदर राजसिक व तामसिक घातक भाव ही उत्पन्न होंगे और आप सारा दिन सोचो में डूबे रहोगे। इस तरह जीवन का कोई भी निश्चय सही तरीके से नहीं ले पाओगे और पराश्रित हो जाओगे। धीरे-धीरे दूसरे आपकी इस कमजोरी का लाभ उठाने लगेंगे और आप एक विवश इंसान की तरह रोते-झुखते हुए अपना सारा जीवन व्यतीत कर दोगे। इस तथ्य से सज्जनों ज्ञात होता है कि जिसके पास आत्मज्ञान नहीं होता वह इंसान आत्म-विस्मृत हो जाता है। अपने यथार्थ ज्ञान, गुण व शक्ति के प्रति आत्म विस्मृत ऐसे इंसान को फिर जो चाहे गधों की तरह हांक कर अपने मनगढ़ंत ज्ञान के पीछे लगा लेता है। इस संदर्भ में सज्जनों एक बार अपना आत्म विश्लेषण करके देखो कि कहीं आप इस उलझन में तो नहीं उलझे हुए?

यदि लगे कि ऐसा ही है तो फिर जान लो कि इसका एक ही हल है वह है आत्मज्ञान। आत्मज्ञान को प्राप्त कर सज्जनों जान जाओ कि '**मैं**' हकीकत में क्या हस्ती हूं? दिखने में चाहे मैं नश्वर वस्तु हूं पर हकीकत में '**मैं**' वह अजर अमर आत्मा हूं जिसमें परमपिता परमात्मा है। जानो शरीर रूपी वस्तु मिट सकती है पर अजर अमर हस्ती आत्मा कभी नहीं मिटती।

अब सज्जनों फिर से ध्यान से देखो कि आपका ख्याल व ध्यान शरीर रूपी वस्तु के साथ जुड़ा हुआ है या अजर अमर आत्मा के साथ जो इस शरीर को चलायमान करती है?

विचारों कि इस आत्मा के बिना इस शरीर रूपी वस्तु की क्या कीमत है?

सजनों इस सत्य का बोध आपको आत्मज्ञान द्वारा ही हो सकता है। जान लो जो इस आत्मज्ञान की प्राप्ति में समय लगाने से सकुचाता है वह मूर्ख अपना जीवन बर्बाद कर बैठता है। अतः अगर अपना जीवन आबाद करना चाहते हो तो सतवस्तु के कुदरती ग्रंथ में वर्णित आत्मिक विचारों को विधिवत धारण करो। जान लो जब इन विचारों को धारण कर लोगे तो मन तुष्ट हो, शांत हो जाएगा यानि संतोष प्राप्त हो जाएगा और आप अमीरों के भी अमीर हो निर्भय हो जाओगे क्योंकि आपको लगेगा कि मेरे पास सब कुछ है और मुझे किसी का डर नहीं है। ऐसा सज्जन ही सज्जनों परोपकार कमा पाता है और निष्काम सेवा में अपना समय लगा पाता है। इस निष्काम सेवा के प्रभाव से उसका चित्त शुद्ध हो जाता है और पिछले जन्मों के समस्त संचित कर्मों का नाश हो जाता है। इस महत्ता के दृष्टिगत ही सज्जनों निष्काम भाव से नीति अनुसार सेवा करने के लिए बल दिया जाता है। यहां याद रखो सेवा झुकाव है, अहंकार विनाशक है और सेवा से ही सज्जन भाव उजागर होता है। अन्यथा पिछले जन्मों के संचित कर्मों का फल भुगतना ही पड़ता है। निष्काम सेवा के बिना इन संचित कर्मों से छुटकारा पाने का सज्जनों और कोई साधन नहीं है चाहे आप जितना ही जप-तप कर लो। यह सब सज्जनों आपको इसलिए बता रहे हैं ताकि आपके शहर में जो सुविधाएं हैं, आप उन सुविधाओं का लाभ जरूरतमंद सज्जनों तक निष्कामता से पहुंचाने में किंचित मात्र भी कमजोर मत पड़ो। अन्य शब्दों में आपके अंदर किसी कारण भी कामना उत्पन्न न हो और आप उत्साह पूर्वक सब तक इस सेवा का लाभ खुशी से पहुंचाओ। अब बताओ कि क्या यह सुनने के बाद अंदर सेवा करने के प्रति दिलचस्पी पैदा हुई है?
हां जी।
तो फिर क्या यह उम्मीद रखोगे कि कोई मुझे कहेगा तो मैं काम करूंगा?

नहीं जी।
याद रखो सज्जनों सेवा भाव में जो आना चाहता है वह अपने आपको पेश करता है। आशय यह है कि अपने आप स्वीकारा हुआ काम इंसान खुशी से करता है। आपको भी ऐसा ही बनना है। जितनी भी इस द्वारे की सुविधाएं, जरूरतमंदों तक पहुंचा सको वे पहुंचानी है। इसके प्रति किसी ने कोई सोच नहीं बनानी क्योंकि यहां सब मालिक के प्यारों का है। उन प्यारों तक उनका हक पहुंचाना सुकर्म है व सबके लिए लाभकारी है। इसीलिए अनथक परिश्रम दिखाने से सकुचाना नहीं व इस तरह मेहनत करना कि अन्य शहरों को भी लुधियाना के सज्जनों से सीख मिले। तो क्या हम समझे कि ऐसा ही होगा?
हां जी।

तो फिर मिलकर बोलो:-

**हम घर साजन आए हमारे, हमरा भाग्य जगाने को**
**जीवन का इक मकसद देकर, परोपकार कराने को**

इस परोपकार के कार्य के प्रति सज्जनों न केवल लुधियाना शहर के सज्जनों को अपितु अपने आसपास के शहरों के सज्जनों को भी प्रेरित करो ताकि उनके जीवन में भी उत्साह और सकारात्मकता आए और वे भी आपस में लड़ने झगड़ने के स्थान पर इस जीवन का सुख आनंद भोगने में सक्षम हो सके। इसी के साथ सज्जनों परस्पर सज्जन भाव अनुसार प्रसन्नता पूर्वक बातचीत करने का तरीका अपनाओ। इस बात का अभ्यास पहले घरों से आरंभ करो और फिर जब सत्संग में मिलते हो तो वहां एक दूसरे को सजन जी, सजन जी कहकर संबोधित करो और मिलजुल कर काम करते हुए, आगे बढ़ते जाओ। सूरजकुंड व प्रगति मैदान की तरह आपके शहर के सज्जन भी लुधियाना शहर में सतवस्तु के कुदरती ग्रंथ के विचारों का प्रसार करने में सक्षम हो, ऐसी युक्ति लड़ाओ। इस तरह कलियुगी स्वभावों से त्रस्त मानव जाति को समभाव समदृष्टि की युक्ति अपनाने के प्रति जागृत कर, इंसानियत में आने का आवाहन दो। जानो यह बहुत

बड़ा परोपकार है। इस परोपकार द्वारा अचेतन अवस्था में गिरे हुओ को उठाओ, रोते हुओ को हंसाओ उजड़े हुओ को वसाओ ताकि कलियुगी स्वभावों से ऊपर उठकर इंसान अपने आपको मानव धर्म अनुकूल साध लें। जानो जो इंसान अन्य को जागृति में लाने का ऐसा उद्यम दिखाएगा उसकी ही अंदरूनी शक्ति जागृत होगी और वही समझदार व अकलमंद इंसान सफलता के चरम शिखर तक पहुंच अपना जीवन सफल बनाएगा। इस बात को समझते हुए सज्जनों हिम्मत दिखाओ, हिम्मत दिखाओ और ताकत में आ जाओ।

**आप ऐसा करने में कामयाब हो इन्हीं शुभकामनाओं के साथ**
**सभी सज्जनों को जय सीता राम जी।**